महामति कहें ए साथ जी, एह श्री देवचन्द्र जी की बीतक ।
आगे खोज करेंगे, सो बातें बुजरक ॥९४॥

अब धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुंदरसाथ जी ! उमरकोट से लेकर कच्छ पंहुचने तक कितना कठिन, कठोर संकटों का मार्ग होने पर भी देवचन्द्र जी अपनी अडिगता और अटल विश्वास लेकर सब संकटों को पार करते हुए कच्छ पंहुचे और अब सब धर्मों में परमात्मा की खोज करेंगे। जो बहुत ही महत्वपूर्ण प्रसंग है ।

प्रकरण-२, चौपाई-१२२

बीतक कच्छ देश की

अब कहो कच्छ देस की, पहुंचे आप आये जित ।
तहां आये खोज करी, सो बताऊं इत ॥१॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि जब श्री देवचन्द्र जी महाराज कच्छ पहुंचे तो किस प्रकार से उन्होंने सभी धर्मों में जा कर खोज की । वह वृत्तान्त हम बताते हैं ।

लगे खोज करने, बैठे देहुरे जाय ।
चरचा को उत पूछत, वे प्रतिमा को ठहराय ॥२॥

कच्छ में पंहुच कर वह एक मंदिर में गये जहां मूर्ति थी । तो उन्होंने पुजारी से पूछा कि यहां चर्चा किस समय होती है । उसने कहा कि चर्चा वहां होती है जहां साक्षात् भगवान नहीं होते ।

तहां मन माने नहीं, राह न आवे नजर ।
कोइक दिन रहे तिन में, फेर उठे खोज ऊपर ॥३॥

मूर्ति पूजा तो उन्होंने चार वर्ष करके देख ली थी और यह निर्णय ले लिया था कि मूर्ति पूजा भगवान की पहचान नहीं करा सकती । इसके बाद आगे निकले ।

आये खोजे सन्यासी, बड़े डिंभ धारी ।
आम पूजे तिन को, आवे खलक सारी ॥४॥

तो वहां सबने यही बताया कि भगवान की प्राप्ति सन्यास मत धारण किये बिना नहीं हो सकती तब वे सन्यास मत वालों के यहां गये क्योंकि आम जनता सन्यास मत को ही मानने वाली थी। वहां पंहुच कर देखा कि वहां गुरू बड़े आडम्बर वाले, डिम्बधारी ऊपर की वेशभूषा वाले थे ।

Nijanand App

तहां जाय के खोजिया, कहें जानत हैं सब हम ।
देवें नाम सुमरन, नेहेचे कर ग्रहो तुम ॥५॥

देवचन्द्र जी ने परमात्मा की प्राप्ति के बारे में पूछा तो बोले कि हम परमात्मा के बारे में जानते हैं और निश्चय ही उसकी प्राप्ति करा सकते हैं पर सन्यास मत का मन्त्र लेकर हमें गुरू धारण करना होगा ।

और चरचा करें दत्त की, लिया नाम सुमरन ।
दिल में कछु न आवहीं, क्यों ए न पतीजे मन ॥६॥

उन्होंने उनका मन्त्र ले लिया वे दत्तात्रेय ऋषि की कथा सुनाते थे । दत्तात्रेय की कथा से मन को करार नहीं आया ।

कोइक दिन तहाँ रहे, फेर चले जागा और ।
बड़े डिंभ कन फटे, चले गये तिन ठौर ॥७॥

कुछ दिन तो उनकी सेवा भी की, नाम सुमरन भी किया, अष्टांग योग साधना और देह दमन भी किया । जब परमात्मा की प्राप्ति नहीं हुई तो उन्हें छोड़कर गुरू गोरखनाथ के चेले, जो तांत्रिक विद्या की शक्ति रखते थे और वे भी ऊपर के आडम्बर बनाए हुए कनफटे, माला धारी थे । उनके आश्रम में चले गए ।

वे राज गुरू कहावते, बहुत चेले तिन को ।
कच्छ देस ताय मानहीं, जाय पहुंचे इन मों ॥८॥

उनको वहां के कच्छ देश का राजा भी गुरू मानता था । राजा के गुरू होने के कारण कच्छ देश की जनता भी उनकी अनुयायी थी, देवचन्द्रजी वहां पंहुचे ।

कोइक दिन तहां रहे, साख न होय अन्दर ।
पूछी चरचा तिनकी, कछु न पड़े खबर ॥९॥

कुछ दिन उनके आश्रम में भी रहकर सब कुछ सीखा पर तांत्रिक विद्या से कुछ प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि यह ऋद्धि-सिद्धी है । उनको पारब्रह्म की कोई खबर नहीं थी । कुछ दिन बाद वहां से उनको छोड़कर और जगह गये ।

फेर वैरागी कापड़ी में, रहे कोइक दिन ।
वस्त न देखी तिन में, परे इन्द्री बस मन ॥१०॥

अब भेषधारी वैरागियों के डेरे में कुछ दिन रहे ! पारब्रह्म के ज्ञान की जानकारी उन्हें नहीं थी । वे अपने शरीर के पालन-पोषण में लगे थे ।

Nijanand App

इन भाँत मेहेजद में, मुल्ला की करी सोहबत ।
तहाँ कछु न पावहीं, कोइक दिन रहे तित ॥११॥

जब वहां भी कुछ नहीं प्राप्त हुआ तो एक मस्जिद में मुल्ला के पास गए और मुल्ला जैसे शरीयत की बन्दगी करते रहे । उस मार्ग से भी परमात्मा की प्राप्ति का कोई लक्ष्य नही मिला तो उन्हें भी छोड़ दिया ।

और ब्राह्मण भेष कई, और भेष सब ठौर ।
खोजत ही फिरत रहे, मेहनत करी जोर ॥१२॥

तब बड़े-बड़े भेषधारी ब्राह्मण, कथा वाचक और कर्मकाण्डियों की शरण में गए । हर प्रकार के कठिन परिश्रम के बाद भी कुछ नहीं मिला तो -

फिर भोजनगर आए, तिन सहर में ।
तहां हरदास जी रहे, भई सोहबत तिन से ॥१३॥

विवश होकर अन्त में भोजनगर जहां हरदास जी रहते थे वहां गए ।

वे थे राधा वल्लभी, सेवत कारज आतम ।
सेवा बंके बिहारी की, करे सखी भाव धरम ॥१४॥

हरिदास जी राधा वल्लभी मार्ग के अनुयायी थे । उस मंदिर में बांके बिहारी की मूर्ति तो अवश्य थी पर पुरुष का तन होने पर भी वे सखी भाव से अपनी आतम के कल्याण के लिए, सेवा, पूजा, नित्य पाठ करते थे ।

रहे तिनकी सोहबत में, देखी सेवा अत प्रेम ।
साँचा देखा तिन को, सेवत हैं अत नेम ॥१५॥

कुछ दिन उनकी शरण में रह कर देखा कि उनके अन्दर सच्चा सखी भाव और प्रेम से सेवा करने का निराला ढंग था और नियम से सेवा करते थे ।

जब रूत आवे गरमी की, तब सेवा तिन माफक ।
ठंडक करें हर भांत सों, आगा समे रूत ताकत ॥१६॥

ऋतु के आने के पहले ही सब प्रकार की वस्तुओं का प्रबन्ध कर लेते थे । गर्मी में ठंडक और सर्दी की ऋतु में गर्मी का प्रबन्ध करते थे ।

Nijanand App

जाड़े की रूत मिने, गरमी का करें इलाज ।
अब ए वस्त करों, चाहिएगी मुझे आज ॥१७॥

और जाड़े की ऋतु में हर प्रकार से मंदिर में गर्मी का प्रबन्ध रखते थे । वे हर ऋतु में मौसम के अनुसार प्रबन्ध पहले से कर लेते थे ।

अस्नान करें दिन में, दोय चार वखत ।
जब रूत पलटे में चाहिए, गरमी सीत होय इत ॥१८॥

मंदिर में सेवा में रहते समय वे दिन में दो चार बार स्नान अवश्य करते थे । चाहे गर्मी हो या ठंडक हो । स्वच्छता और पवित्रता से सेवा करते थे ।

तब इनको अस्नान का, फेर फेर वखत होय ।
ए सांचवटी देख के, ऐसी करे न कोय ॥१९॥

मंदिर में सेवा के लिए चार-पांच बार जाना ही पड़ता था तो वे चार-पांच बार स्नान करते थे । ऐसी सच्ची लगन को देखकर निर्णय लिया कि ऐसा सच्चा प्रेम तो आज तक देखा ही नहीं ।

इन ठिकाने आये के, आतम पायो करार ।
ए सांचवटी देख के, करने लगे विचार ॥२०॥

इनकी शरण में आकर, सच्चाई और प्रेम की सेवा को देख कर उन्होंने यह निश्चय किया कि इनकी सेवा करने से मुझे कुछ प्राप्ति हो सकती है ।

इनकी मैं सेवा करों, वस्त ग्रहों इनसों ।
तब लगे सेवा करने, रहें इनकी सोहबत मों ॥२१॥

किसी से आत्मा का ज्ञान लेने के लिए सेवा के अलावा कोई रास्ता नहीं है । इसलिये यह सोच कर उनकी शरण में रहने लगे । और उनकी सेवा करने लगे ।

नित्याने चरचा सुने, जाय बैठे सोहबत ।
जब ए मतू मेहते सुनी, धाय के आए तित ॥२२॥

उन्हीं के घर में रह कर प्रतिदिन उनकी सेवा करते एवं उनके मुखार बिन्द से श्री भागवत की चर्चा सुनते थे । क्योंकि हरदास जी मत्तू मेहता के गुरू थे । इससे उनको पता लग गया कि देवचन्द्र जी हरदास जी के घर में हैं । तो वह शीघ्रता से ही हरदास जी के घर पहुंच गये ।

Nijanand App

नसीहत जो कहने हती, सो कह कह थके सब ।
ए क्योंए माने नही, बेजार हुए तब ॥२३॥

पिता श्री मत्तू मेहता ने सब प्रकार से सिखापन दिया कि अभी युवा अवस्था है । सांसारिक सुख लेना चाहिए । पर देवचन्द्र जी किसी प्रकार की माया की बात सुनते ही नहीं, रोज-२ पिता जी की बात सुन कर दुःखी हो गये ।

श्री देवचन्द्र जी माया के, क्योंए नजीक न जाये ।
इनको वह गमे नहीं, बड़ो दुःख पहुंचाय ॥२४॥

क्योंकि श्री देवचन्द्र जी को माया अच्छी नहीं लगती थी । इसलिए माया के प्रलोभनों को जो पिता जी देना चाहते थे सुन कर दुःखी हो गये ।

हरदास की सेवा करें, मनसा वाचा करम ।
कछू सक न ल्यावहीं, रहें आतम के धरम ॥२५॥

अपनी आत्मा के कल्याण हेतु हरदास जी की सेवा मन, वचन, कर्म से संशय रहित होकर करते थे।

देख सांचे हरदास जी इनको, मन में देऊं नाम सुमरन ।
ऐसो विचार करके, एक दिल में लिया दिन ॥२६॥

जब हरदास जी ने इनकी सच्ची लगन से सेवा को देखा कि इनको लोक लाज मर्यादा लगती ही नहीं है तो ऐसा देख कर हरदास जी ने बांके बिहारी का नाम सुमरन देने के लिए एक दिन निश्चय कर दिया।

मत्तू मेहता विचार करें, क्योंए डारों माया में ।
तो ए हाथ आवे मेरे, छूटे वैराग इनसे ॥२७॥

उधर मत्तू मेहता जी ने सोचा कि मैं कौन सी युक्ति करूं कि जिसके प्रलोभन से देवचन्द्र जी का वैराग्य छूट जाय और माया में फंस जायें ।

एक ठौर सगाई करके, ब्याह को धरायो दिन ।
वही दिन था उत्तम, लेने का नाम सुमरन ॥२८॥

देवचन्द्र जी की इच्छा के विरूद्ध ही पिता श्री मत्तू मेहता जी ने उनकी सगाई का एक शुभ दिन देखकर, विवाह (शादी) का दिन निश्चित कर दिया । उधर वही दिन नाम सुमरन लेने के लिए भी शुभ था ।

Nijanand App

मारग राधावल्लभी में, लेने नाम सुमरन ।
भद्र भेष होत है, श्री देवचन्द्रजी विचार किया मन ॥२९॥

राधा वल्लभी मार्ग के अंदर नाम सुमरन के लिए भद्र भेष होना पड़ता है । यह सूचना श्री देवचन्द्र जी को मिल गई और वे मन में विचार कर तैयार हो गए ।

हरदास जी ने पूछिया, तुमको नाम सुमरन देवें आज ।
भद्र भेष हो आओ, तो होय तुम्हारा काज ॥३०॥

देवचन्द्र जी मंदिर में हरदास जी के पास गए तो हरदास जी ने उनसे कहा कि आप भद्र भेष होकर आओ । मैं तुमको नाम सुमिरन देना चाहता हूं । जिस नाम सुमिरन से तुम्हारी आत्मा का कल्याण होगा।

तब ही भद्र भेष होय के, आय के बैठे पास पूछा नाम ।
सुमरन काहू का लिया है, कह्या सन्यासी का कर विस्वास ॥३१॥

देवचन्द्र जी तुरन्त भद्र भेष होकर (मुंडन कराकर) स्नान करके चरणों में बैठ गए । हरदास जी ने पूछा कि क्या आपने किसी का नाम लिया है ? तो देवचन्द्र जी ने कहा, हाँ ! सन्यास मत वालों को मैंने गुरू धारण किया है एवं उन्हीं के दिए नाम का मैं सुमिरन करता हूं ।

कहा सोई नाम सुमरन, चिट्ठी में लिख कर ।
रोटी में चिट्ठी वायके, देवो सन्यासी को यों कर ॥३२॥

हरदास जी ने कहा वह सन्यास मत का नाम एक कागज पर लिखकर उस कागज को रोटी बनाते समय आटे में डालकर उसकी रोटी बनाकर सन्यासी को दे देना तो उनका मन्त्र उनके पास चला जाएगा।

तब श्री देवचन्द्रजी ने कह्या, इनसे कछु न होय ।
जो नाम ओ जोरावर, तो क्योंकर निकसे सोय ॥३३॥

तब देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया कि गुरूदेव ! ऐसा ही करूंगा परन्तु इससे क्या होगा ? यदि बांके बिहारी जी के नाम से सन्यास मत वालों का नाम जोरावर होगा तो वह मेरे मन से कभी भी नही निकलेगा ।

जो तुम्हारा नाम जोरावर, ओ आपही होवे दूर ।
ए तो अर्थ ऊपर का, ए आम का मजकूर ॥३४॥

और यदि बांके बिहारी जी का नाम शक्तिशाली होगा तो सन्यास मत वालों का नाम अपने आप मेरे मन से निकल जाएगा । रोटी में चिट्ठी डालकर नाम को वापस करना आम जनता की अज्ञानता का प्रमाण है । आम जनता के लिए ठीक है ।

Nijanand App

सुन ऐसी बात हरदास जी, बड़ो जो पायो सुख ।
दियो नाम सुमरन, देखो सरूप सनमुख ॥३५॥

श्री देवचन्द्र जी के इस विवेकशील विचार को सुनकर हरदास जी अति प्रसन्न हुए और तुरन्त बांके बिहारी जी का नाम सुमिरन देने के लिए कहा कि उनके स्वरूप के सामने देखो ।

भजमन श्री वृन्दावन, कुञ्जबिहारी नित बिलास ।
एह राखो तुम दिल में, सुमरो कर विस्वास ॥३६॥

सामने जो बांके बिहारी की मूर्ति है यह अखण्ड वृन्दावन के बांके बिहारी हैं, जो कुञ्जवन में प्रेम की लीला कर रहे हैं । इनको ही अपनी आत्मा का पति मानकर सच्चे भाव से सुमिरन करना ।

सखी भाव होय भजिओ, उपदेस करके एह ।
विदा दई तिन घर को, देखा मतू मेहते तेह ॥३७॥

अपने आपको एक सखी मान कर सदा उनका सुमरन करना, यह उपदेश देकर घर विदा कर दिया। घर के मुख्य द्वार पर पिता जी खड़े मिले । देवचन्द्र जी के माता-पिता उमर कोट को छोड़ कर एक ही सन्तान होने के नाते यहीं पर आ कर रहने लगे थे ।

भद्र भेष देख के, करने लगे सोर ।
ए कैसो काम कियो, चाहिए सिनगार इस ठौर ॥३८॥

देवचन्द्र जी को भद्र भेष में आते देख कर अति क्रोधित हो कर बोले, हे देवचन्द्र ! तुमने यह कैसा रूप बनाया है आज तो तुम्हारे सिर पर मुकुट का श्रृंगार करना था पर तुम तो माता-पिता की मृत्यु के शोक जैसा रूप बना कर आ रहे हो ।

रोय पीट दुख पाय के, खीज डराय कहे सुकन ।
श्री देवचन्द्र जी उत्तर दियो, तुम क्या चाहत हो दिन ॥३९॥

मतु मेहता क्रोध में आ कर लड़े, खीझे, दुःखी हुए और कटु वचन कहकर डराया, धमकाया पर मुन्डन हो जाने पर हो ही क्या सकता था । तब देवचन्द्र जी ने पूछा कि- हे पिता जी ! आप किस दिन की खुशी मनाना चाहते थे ।

मैं ब्याह करने था जिनसों, किया है तिन सों ।
मैं तो तुमको बरजिया, मेरे काम नहीं इनमों ॥४०॥

मेरी आप शादी ही तो करना चाहते थे तो मैंने जिससे आत्मा की शादी करनी थी, उससे करके आया हूं । आत्मा की शादी में संसार से विमुख होकर सिर का मुन्डन ही करवाना पड़ता है । मैंने तो सांसारिक विवाह के लिए बार-बार आपको मना किया कि ये मुझे सुहाता नहीं है ।

Nijanand App

ऐसे में ब्याह हुआ, खटपट नित होइ ।
श्री देवचन्द्र जी हरदास जी की, सेवा करत है सोइ ॥४१॥

ऐसे खटपट में शरीर का विवाह भी हो गया पर देवचन्द्र जी ने हरदास जी एवं मंदिर की सेवा में कोई अन्तर नहीं आने दिया ।

रहे सोहबत हरदास जी की, दोय पहर रात लगे ।
चरचा और कीर्तन में, गुजरान करते ए ॥४२॥

देवचन्द्र जी रात्रि के बारह बजे तक हरदास जी के पास वाणी चर्चा एवं सेवा में ही अपना समय व्यतीत करते थे ।

रहें एक पहर घर अपने, पीछली रात रहे जब पोहोर ।
तब हरदास जी के मंदिर प्रदक्षिणा, देवे मेहनत जोर ॥४३॥

केवल एक पहर रात्रि के १२ से ३ बजे तक घर में रहते थे । फिर नहा-धोकर शुद्ध होकर अपनी आत्मा के कल्याण के लिए हरदास जी के मंदिर में एक पहर तक परिक्रमा करते थे ।

एक दिवस हरदास जी, उठे थे देह कारज ।
ऊपर झरोखे थें देखिया, कह्या कौन फिरत कौन गरज ॥४४॥

एक दिन रात्रि को देह क्रिया के लिए हरदास जी उठे और अपने मकान के चारों ओर घूमता देखकर बोले- कौन है और किस काम से घूम रहा है ?

रात पिछली पहर एक है, घर के पीछे फिरत ।
ए कौन सख्स आयो कहा, ए देख के तित ॥४५॥

अभी तो रात्रि के तीन बजे हैं तुम कौन हो और मेरे मकान के चारों ओर किस गरज से घूम रहे हो।

तब हरदास जी टोकिया, कौन सख्स हो तुम ।
तब श्री देवचन्द्र जी उत्तर दिया, कह्या इत आये हैं हम ॥४६॥

तब हरदास जी ने टोका और पूछा तुम कौन हो तो उन्होंने उत्तर दिया कि मैं देवचन्द्र हूं और कोई नहीं है ।

स्वर पहिचाना हरदास जी, आए श्री देवचन्द्र जी तुम कित ।
खोल द्वार घर में लिए, तुम क्यों आए इस वखत ॥४७॥

तब हरदास जी ने देवचन्द्र जी की आवाज को पहचाना और नीचे आकर पूछा कि बारह बजे तो आप गए ही थे तो तीन बजे कैसे चले आए ।

Nijanand App

जवाब श्री देवचन्द्र जी दिया, सुनिए आप वचन ।
रात खबर मोहे न रही, मैं जान्या उग्या दिन ॥४८॥

देवचन्द्र जी ने उत्तर दिया हे गुरूदेव ! सुनिए, मुझे रात के समय की खबर ही नहीं लगी । मैंने समझा कि दिन होने वाला है इसलिए मैं चला आया ।

सेवा करे न जनावहीं, अपनी आतम के कारन ।
दिखावें नहीं काहू को, समझावें अपना मन ॥४९॥

वे अपनी आतम के कल्याण के वास्ते सेवा करते थे और किसी को खबर भी नहीं होने देते थे ! गुप्त सेवा से अपने मन में शान्ति प्राप्त करते थे ।

हरदास जी सुन के, कही है माफक परवान ।
ए नित प्रदक्षिणा देवहीं, और दिन की सेवा करे जान ॥५०॥

हरदास जी जानते थे कि यह अपने आतम कल्याण के लिए इतनी कसनी कर रहे हैं ऐसा ही करने से आतम का कल्याण होता है देवचन्द्र जी नित्य ही रात्रि को परिकरमा और दिन को हरदास जी की और मंदिर की सेवा करते थे ।

एक दिवस हरदास जी, थे सेवा में हुसियार ।
आगे श्री देवचन्द्र जी, बैठे थे खबरदार ॥५१॥

एक दिन हरदास जी निज मंदिर में बांके बिहारी की सेवा कर रहे थे और बाहर देवचन्द्र जी हर प्रकार की वस्तु देने के लिए खड़े थे । तो क्या हुआ ?

तब एक सख्स को, मारा बिच्छू ने जोर ।
तिनके आकार में चेतन, कछु न रह्या इस ठौर ॥५२॥

कि भोजनगर में किसी आदमी को काले बिच्छू ने काट लिया । अधिक जहर फैलने से वह शख्स बिल्कुल बेहोश हो गया था ।

चार जने पकड़ के, आये खड़ा किया सामे द्वार ।
और सख्स जो संग के, सो करने लगे पुकार ॥५३॥

चार जने मिल कर उसे खाट पर लिटा कर हरदास जी के द्वार पर ले आये और जोर-जोर से पुकारने लगे क्योंकि हरदास जी बिच्छू के डंक का जहर उतार देते थे ।

Nijanand App

आए बाहिर देखिया, हरदास जी इन समे ।
हाथ मूंछो पर फेरते, हुआ चैन तिन समे ॥५४॥

हरदास जी बाहर आए । उसकी ऐसी दशा को देख कर तुरन्त मंत्र पढ़ा और मूंछों पर हाथ फेरा तो उस आदमी को चैन मिला और कुछ सुध आ गई ।

फेर के दूसरी बेर हाथ, मूंछों पर फेरा जो और ।
तब आकार चेतन होए के, खड़ा रहूया इस ठौर ॥५५॥

दूसरी बार फिर वही मन्त्र पढ़ कर जब मूंछों पर हाथ फेरा तो वह शक्स जिसको बिच्छू ने काटा था तुरन्त उट कर खड़ा हो गया ।

तीसरी बेर फेरते, जोर न लगे जब ।
तब जहर कछु ना रहूया, दण्डवत किया तब ॥५६॥

तीसरी बार मन्त्र पढ़ कर मूंछों पर हाथ फेरने में कुछ कठिनाई नहीं हुई तो उसका पूरा जहर उतर गया और उन्होंने उनके चरणों में दण्डवत प्रणाम किया ।

सबों ने सलाम कर, अस्तुत करी बनाइ ।
जीव दान तुमने दिया, तुम्हारी बड़ाई कही न जाइ ॥५७॥

मुसलमान होने के नाते उसके सगे सम्बन्धियों ने हरदास जी की स्तुति करते हुए कहा कि दुनियां में दान तो हर वस्तु का सब करते ही हैं पर जीव का दान परमात्मा ही कर सकता है । तुम इस भोज नगर में परमात्मा के तुल्य हो । ऐसी महिमा गाते हुए वे घर चले गये ।

तब हरदास जी ने कहूया, श्री देवचन्द्र जी सो वचन ।
श्री देवचन्द्र जी बड़ो मंत्र है, ए रखों तुम्हारे तन ॥५८॥

तब हरदास जी ने देवचन्द्र जी से यह कहा कि ये मंत्र बिच्छू के जहर उतारने का बड़ा परोपकारी है। मैं चाहता हूं कि आप इसे सीख लो ।

जो एक घड़ी फुरसत, न होती मंत्र कहने में ।
तो प्राण न रहते इन के, होत ऐसो उपकार इन से ॥५९॥

यदि इस समय मन्त्र कहने में एक घड़ी भी देरी कर देता या मुझे किसी कारण एक घड़ी फुरसत नहीं होती तो इस प्राणी के प्राण निकल जाते । मंत्र पढ़ने से उसके प्राण बच गये । यह इतना परोपकारी मंत्र है ।

Nijanand App

तब श्री देवचन्द्र जी ने कह्या, हरदास जी सुनो तुम ।
हम को मंत्र जो तुम दियो, सो हृदय राखें हम ॥६०॥

तब देवचन्द्र जी बोले- हे गुरु देव सुनिए ! जो मन्त्र आपने हमें पहले दिया है । वह मैंने विधिवत सखी भाव से अपने मन में धारण कर लिया है ।

सो ए मंत्र कैसा है, जो लाख बिच्छु का दुख ।
सो जनम और मरण का, छुड़ाय के देवे सुख ॥६१॥

वह मंत्र जन्म मरण के समय लाख बिच्छू के काटने जैसा जो दुःख होता है उस जन्म मरण के दुःख से छुड़ा कर अखण्ड योगमाया में नित्य वृन्दावन का सुख प्रदान करता है ।

सो मंत्र जिन उर में रहे, तहां ए कैसे समाय ।
तब हरदास जी रीझ के, सिफत करी बनाय ॥६२॥

ऐसा शक्तिशाली मंत्र जिस हृदय में हो । उसमें एक साधारण बिच्छू के जहर उतारने वाला मंत्र कैसे समा सकता है । हरदास जी देवचन्द्र जी के उत्तर को सुनकर प्रसन्न हुए और कहा- तुम धन्य हो और तुम्हारी बुद्धि धन्य है ।

हे श्री देवचन्द्र जी ए बुध, हममें नहीं लगार ।
जो तुम कहत हो, सो हम में नहीं विचार ॥६३॥

तब हरदास जी ने कहा कि हे देवचन्द्र जी ! तुम्हारे पास विवेकशील बुद्धि है । वह मेरे पास नहीं है। आत्म कल्याण के बारे में जैसा तुम्हारा दृढ़ विश्वास है वैसा मेरे पास नहीं है ।

इन भांत के बीतकें, भई माहें भोजनगर ।
श्री देवचन्द्र जी सेवा करें, पड़े न काहू खबर ॥६४॥

इस प्रकार भोजनगर में कई प्रकार की घटनाएं होती रही पर देवचन्द्र जी सेवा करने और अपनी आत्मा के कल्याण के लिए कसनी में लगे रहे । जिसकी खबर किसी को नहीं हुई ।

एक दिन फिरते घर को, देखे झरोखे पर ।
देखा श्री देवचन्द्र जी को फिरते, बुलाय लिए ऊपर ॥६५॥

प्रतिदिन के अनुसार एक दिन हरदास जी देह क्रिया के लिए फिर उठे तो देखा कि देवचन्द्र जी फिर परिक्रमा कर रहे हैं तो हरदास जी तुरन्त नीचे आए और किवाड़ खोलकर अपने साथ ऊपर ले गए और बोले ।

Nijanand App

मैं जान्या तुम एक दिन, भूल के रात को आये ।
ए तो नित फिरत हो, मैं ए मेहनत सही न जाये ॥६६॥

हे देवचन्द्र जी । मैंने तो सोचा था कि उस दिन आप भूलकर आ गए होंगे, पर आप तो प्रतिदिन मेरे मकान की परिकरमा लगाते हो और मैं सोया रहता हूं । जिस कारण परिकरमा का बोझ मेरे सिर पर पड़ता है । जिसको मैं सहन नहीं कर सकता । परिकरमा तो इष्ट देव की की जाती है, न कि गुरूदेव की।

तुम मोसों कहा कहत हो, क्या मांगत हो मुझ से ।
मोसों तुम कह देवो, वह मैं देऊं तुमें ॥६७॥

आखिर तुम मुझसे क्या चाहते हो । आज तुम मांग लो । मैं वही दे दूंगा ।

तब हरदास जी ने कहूया, मैं तुम्हें देऊं बालमुकुन्द ।
तिनकी सेवा तुम करो, ज्यों पावो आनन्द ॥६८॥

देवचन्द्र जी के चुप रहने पर हरदास जी ने कहा- मेरे मंदिर में दो भगवान की मूर्तियां हैं उनमें से मैं बाल मुकुन्द की मूर्ति तुम्हें देता हूं । अपने घर में मंदिर बनाकर वहीं उनकी सेवा परिकरमा करके आनन्द लो ।

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहूया, जो आज्ञा तुम्हारी होय ।
सोई हमें करनी, करें सेवा जो सोय ॥६९॥

तब देवचन्द्र जी ने कहा- "हे गुरूदेव गुरू वाक्यं, ब्रह्म वाक्यं" मानकर ही मैं आज्ञा का पालन करूँगा और वहीं सेवा करूँगा ।

महामति कहे ऐ साथ जी, यह बीतक भोजनगर ।
आगे इनके और कहों, बीतक पहिचान पर ॥७०॥

आप धाम के धनी श्री प्राणनाथ जी फुरमाते हैं कि हे प्यारे सुन्दर साथ जी । यह देवचन्द्र जी की भोजनगर की घटना है । आगे श्री देवचन्द्र जी के स्वरूप की पहचान कैसे हुई कहता हूँ ।

(प्रकरण ३, चौ १९२

Nijanand App